

❀ अथ ❀
यजुर्वेदीय-सन्ध्या-प्रयोगः
 ❀ प्रारम्भः ❀

था । प्रा
 अन्तरहु । मान
 धर्म में इतनी श्रद्धा न रह
 गत्वा शास्त्रों का अध्य
 यहीं से होने लगा । यहाँ
 भी हाथ धो बैठे ।

द्विजवरो ! गौतम-का
 की जाती है ? इसके न

रचयिता - पण्डित श्रीवायुनन्दनमिश्रः

जहाँगीराबाद

जहाँगीराबाद २०२१/२६

बलन्दशहर (म.प्र.)

भूमिका

Kirtikant Sharma
29/9/78

दत्त शास्त्री

यो यो यां यां तनुं भक्तः श्रद्धयाऽर्चितुमीहते ।

जहाँगीराबाद २०२३६४

तस्य तस्याऽचलां श्रद्धां तामेव विदधाम्यहम् ॥

बुलन्दशहर (उ.प्र.)

प्राचीन काल में इस धर्मप्राण भारतवर्ष में सम्पूर्ण द्विजमात्र सन्ध्या-वन्दन करते थे। वे इसके गूढ़ रहस्य को समझते थे। वे इसके वैज्ञानिक क्रियाओं से पूर्णतया परिचित थे। इस कारण ही भारतवर्ष के तीनों वर्णों की इतनी असाधारण उन्नति हुई थी। उस समय भारत से बढ़कर कोई सौभाग्यशाली देश न था। विद्या का भण्डार, श्रुति-स्मृति का आगार, धनैश्वर्य का 'आकर' यही था। प्राकृतिक नियमों के परिवर्तन होने से मनुष्यों की बुद्धि के विकास में भी अन्तर हुआ। मानव समाज अपने-अपने ऋषि-मुनियों के वाक्य को भूलने लगा, धर्म में इतनी श्रद्धा न रह गयी, केवल उदर-पोषण मात्र एक कर्म रह गया। अन्ततोगत्वा शास्त्रों का अध्ययन भी छोड़ दिया। भारतीयों की अवनति का प्रारम्भ यहीं से होने लगा। यहाँ तक, कि सन्ध्या कर्म जो द्विजों का मुख्य धर्म था उससे भी हाथ धो बैठे।

द्विजवरो ! गौतम-कपिल-कणाद के वंशजो ! यह सन्ध्या क्या है ? क्यों की जाती है ? इसके न करने से क्या-क्या हानि होती है ? इसका माहात्म्य

संख्या

॥ १ ॥

भूमिका

क्या है? इन सब प्रश्नों का उत्तर सुनिए। सन्ध्या के शब्दार्थ होते हैं—‘सम्यक् ध्यायति परमात्मानम् अस्यां सा सन्ध्या’ अर्थात् जिस काल में परमात्मा का अच्छी तरह ध्यान किया जाता है उस काल को ‘सन्ध्या’ कहते हैं। सन्ध्या कितने कालकी करनी चाहिए—इस विषय में आधुनिक समय में दो समुदाय हैं। एक समुदाय कहता है कि सन्ध्या दो काल की होती है और स्व-मत पुष्टि के लिए मनु भगवान्, पद्मपुराण एवं कूर्मपुराण का प्रमाण उपस्थित करता है।

उभे सन्ध्ये ह्युपासीत तस्मान्नित्यं द्विजोत्तमः ।

(पद्मपुराण, उत्तर खण्ड)

सायं प्रातर्द्विजः सन्ध्यामुपासीत समाहितः ।

कामाल्लोभाद्भयान् मोहात् त्यक्त्वैनं पतितो भवेत् ।

(कूर्मपुराण)

पूर्वा सन्ध्यां जपंस्तिष्ठेत् सावित्रीमार्कदर्शनात् ।

पश्चिमां तु समासीनः सम्यगक्षविभावनात् ॥

पूर्वा सन्ध्यां जपंस्तिष्ठन्नैशमेनो व्यपोहति ।

पश्चिमां तु समासीनो मलं हन्ति दिवा कृतम् ॥

(मनुस्मृति)

॥ १ ॥

दूसरा समुदाय तीन कालकी सन्ध्या बतलाता है और ब्रह्म वैवर्तपुराण और महर्षि कात्यायन का प्रमाण सम्मुख उपस्थित करता है । यथा—

यावज्जीवनपर्यन्तं यस्त्रिसन्ध्यं करोति च ।

स च सूर्यसमो विप्रस्तेजसा तपसा सदा ॥

(ब्र० वै० पु०, प्रकृतिखण्ड, अ० २३)

पूर्वासन्ध्यां परित्यज्य मध्यमां पश्चिमां तथा ।

ब्रह्महत्या-ऽऽत्महत्यां च प्रत्यहं लभते द्विजः ॥

(ब्र० वै० पु०, ब्रह्मखण्ड, अ० २६३)

तिष्ठेदुदयनात् पूर्वा मध्यमामपि शक्तितः ।

आसीन उद्गमाच्चान्त्यां सन्ध्यां पूर्वत्रिकं जपन् ॥

(कात्यायनस्मृति, एकादशखण्ड)

सन्ध्या का माहात्म्य पद्मपुराण में वर्णित है—

यो विप्रस्तपसा युक्तः स परं स्वर्गमाप्नुयात् । सर्वेषामुत्तमं श्रेष्ठं
विमुक्तिफलदायकम् ॥ ब्राह्मणस्य तपो वक्ष्ये तन्मे निगदतः शृणु । सायं
प्रातश्च यः सन्ध्यामुपास्ते स्कन्नमानसः ॥ जपन् हि पावनीं देवीं गायत्रीं
वेदमातरम् । तपसो भावितो देव्या ब्राह्मणः पूतकिल्बिषः ॥ न सीदेत्

प्रतिगृह्णन् स स्वयं पृथ्वी स सागरम् । द्वे सन्ध्ये ह्युपतिष्ठद् वे गायत्री
 प्रयतः शुचिः ॥ यस्तस्य दुष्कृतं नास्ति पूर्वतः परतोऽपि वा । यज्ञदानरतो
 विद्वान् साङ्गवेदस्य पाठकः ॥ गायत्रीध्यानपूतस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम् ।
 एवं किन्विषयुक्तस्तु विनिर्दहति पातकम् ॥

सन्ध्या करने से सम्पूर्ण पाप उस प्रकार भाग जाते हैं जिस प्रकार गरुड़
 के सम्मुख से सर्प ।

सन्ध्यालोपाच्च चकितः स्नानशीलश्च यः सदा ।

तं दोषा नोपसर्पन्ति गरुत्मन्तमिवोरगाः ॥

(कात्यायनस्मृति)

जबतक द्विजगण सन्ध्या करते रहे तबतक उनको दीर्घायु की प्राप्ति होती
 रही । क्रमशः जब भूलना आरम्भ हुआ तब ब्रह्मवैवर्तादि पुराणों ने उनको पतित
 संज्ञा कर दी और स्मृति-ग्रन्थों में प्रायश्चित्त का विधान प्रारम्भ हुआ । संवर्त-
 ऋषि ने अपनी स्मृति में सन्ध्या न करने का प्रायश्चित्त अष्टोत्तर सहस्रवार
 गायत्री जप करने के लिए कहा है । जब इतने पर भी लोगों की रुचि सन्ध्या
 की ओर न बढ़ी तो दक्षजी ने अपनी स्मृति में यहाँ तक विधान कर दिया, कि

सन्ध्या हीन मनुष्य नित्य अशुद्ध है। और नित्य कर्मों के अयोग्य है, और वह जो अन्य कर्म करता है उसके फल का भी भागी नहीं होता—

सन्ध्याहीनोऽशुचिर्नित्यमनर्हः सर्वकर्मसु ।

यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फलभाग् भवेत् ॥

(दक्षस्मृति, द्वितीय अध्याय, ब्रह्मवैवर्त पुराण, प्रकृतिखण्ड, अध्याय २३, ब्रह्मखण्ड, अ० २६, श्रीकृष्ण जन्मखण्ड, अ० ७५)

अतः सन्ध्या के पुनः प्रचार के लिए मैंने यह पुस्तक प्रकाशित की है। आज तक जितनी सन्ध्याएँ छपी थीं उनका न तो क्रम ही ठीक था और न शुद्ध ही थीं। अतएव मैंने कर्मकाण्ड के प्रकाण्ड पण्डित श्रीयुत वायुनन्दजी मिश्र अग्निहोत्री से द्विजमात्र के उपकारार्थ सन्ध्या लिखने के लिए कहा और उन्होंने प्रार्थना स्वीकार कर परिश्रम पूर्वक यह सन्ध्या निर्मित की है। जिसको मैंने प्रकाशित कौ है। मैं अपने प्रकाशन को तब सर्वथा सफल समझूँगा जब कि द्विजमात्र मेरी प्रार्थना पर ध्यान देकर और सन्ध्या की उपयोगिता पर दृष्टि देते हुए इसे नित्य पाठ करने का कष्ट उठायेंगे। किम्बहुना।

पं० प्रेम दत्त शास्त्री

भवदीय—

अर्जुन सिंह

यजुर्वे०

॥ १ ॥

जहाना जवाब र-

बुलन्दशहर (उ०प्र०) ✓

संख्या

❀ अथ यजुर्वेदीयसन्ध्याप्रयोगः ❀

[विधिः]

प्रातः ब्राह्ममुहूर्त में (अर्थात् सवेरे से षड़ी रात बाकी रहे तब) उठ कर, शौच-स्नान करके पूर्वमुख प्रातःकाल व मध्याह्न की सन्ध्या में, और पश्चिममुख सायं सन्ध्या में बैठे । इसके बाद नीचे लिखे हुये मन्त्र से अपने ऊपर कुशा से जल छिड़के ।

(मन्त्रः)

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वादस्थाङ्गतोऽपि वा ।

यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥

॥ १ ॥

(भस्म धारण करने का मन्त्र)

ॐ प्रसद्य भस्मना षोनिमपश्च पृथिवीमग्ने । सठं
सृज्य मातृभिष्ट्वज्ज्योतिष्मान्पुनरासदः ।

(शिखा बाँधने का मन्त्र)

उद्ध्वकेशि विरूपाक्षि मांसशोगितभोजने ।
तिष्ठ देवि शिखामध्ये चामुण्डे चापराजिते ॥

आगे लिखे हुये मन्त्र से विनियोगयुक्त आसन की शुद्धि करे या आसन
पर जल छिड़के ।

(विनियोगः)

ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषः सुतलं छन्दः कूर्मो
देवता आसने विनियोगः ।

पं. न. शर्मा
जहाँगीरानगर २०१३६४
मुब्तदाहर (उ.प्र.)

यजुर्वे०

॥ २ ॥

(मन्त्रः)

ॐ पृथिवी त्वया धृता लोका देवि ! त्वं विष्णुना धृता ।
त्वञ्च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥

आगे लिखे हुये मन्त्रों से तीन आचमन करे ।

(मन्त्रः)

ॐ केशवाय नमः, ॐ नारायणाय नमः, ॐ माधवाय
नमः, ॐ गोविन्दाय नमः, इति करक्षालनम् ।

(सङ्कल्पः)

अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे
अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं ममोपात्तदुरितक्षयद्वारा
श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं यथाशक्ति प्रातःसन्ध्योपासनं कर्म
करिष्ये ।

आगे लिखे हुए विनियोग युक्त मन्त्र से ३ आचमन करे ।

संख्या

॥ २ ॥

(विनियोगः)

ॐ अघमर्षणसूक्तस्याऽघमर्षण ऋषिरनुष्टुप्छन्दः भाव-
वृतो देवता अश्वमेधावभृथे निनियोगः ।

(मन्त्रः)

ॐ ऋतञ्च सत्यञ्चाभीक्षात्तपसोऽध्यजायत । ततो
रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः । समुद्रादर्णवादधि
सम्बत्सरो अजायत । अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य
मिषतोवशी । सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत् ।
दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः ।

आगे लिखे हुए गायत्री मन्त्र से अपने चारों तरफ जल घुमाना ।

(मन्त्रः)

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धोमहि

यजुर्वे०

॥ ३ ॥

धियो यो नः प्रचोदयात् ।

तदनन्तर हाथ में जल लेकर चारों विनियोग पढ़ कर जल पृथ्वी पर छोड़ना ।

(विनियोगः)

ॐकारस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्रीछन्दोऽग्निर्देवता
शुक्लो वर्णः सर्वकर्मारम्भे विनियोगः ॥ १ ॥

(विनियोगः)

ॐ सप्तव्याहृतीनां प्रजापति ऋषिर्गायत्र्युष्णिगनु-
ष्टुब्-बृहतीपङ्क्ति-त्रिष्टुब्-जगत्यश्छन्दांस्यग्नि-वायवादित्य-
बृहस्पति-वरुणेन्द्र-विश्वेदेवा देवता अनादिष्टप्रायश्चित्ते
प्राणायामे विनियोगः ॥ २ ॥

संख्या

॥ ३ ॥

(विनियोगः)

ॐ गायत्र्या विश्वामित्र-ऋषिः गायत्रीछन्दः सविता
देवता अग्निर्मुखमुपनयने प्राणायामे विनियोगः ॥ ३ ॥

(विनियोगः)

ॐ शिरसः प्रजापतिर्ऋषिस्त्रिपदा गायत्रीछन्दो
ब्रह्मा-ऽग्नि-वायु-सूर्या देवता युजःप्राणायामे विनि-
योगः ॥ ४ ॥

निम्न-लिखित मन्त्र को तीन बार पढ़ते हुए नासिका के दाहिने छिद्र से श्वांस धीरे-धीरे खींचे और नासिका के बायें छिद्र को अनामिका मध्यमा से दबाये रहे । तत्पश्चात् ३ बार मन्त्र को पढ़ते हुए नासिका के दाहिने छिद्र को अँगूठे से बन्द कर श्वांस को रोक रखे । इसके बाद तीन बार मन्त्र को पढ़ते हुए नासिका के बायें छिद्र से श्वांस को धीरे-धीरे छोड़े और श्वांस खींचते समय नाभि कमल में नीलवर्ण विष्णु का ध्यान करे । इसको पूरक प्राणा-

यजुर्वे०

॥ ४ ॥

याम कहते हैं। और श्वास रोकने के समय हृदय में रक्त वण ब्रह्मा का ध्यान करे। इसको कुम्भक प्राणायाम कहते हैं। और बाँयें छिद्र से छोड़ते समय ललाट में श्वेतवर्ण शंकरजी का ध्यान करे। इसको रेचक प्राणायाम कहते हैं।

(प्राणायाममन्त्रः)

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः
ॐ सरयं ॐ तरसवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो
नः प्रचोदयात् । ॐ आपो ज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः
स्वरोम् ।

आगे लिखे हुए विनियोगयुक्त मन्त्र से प्रातः तीन आचमन करे ।

(विनियोगः)

ॐ सूर्यश्चमेति ब्रह्मा ऋषिः प्रकृतिश्छन्दः सूर्यर्गो देवता
अपामुपस्पर्शने विनियोगः ।

॥ ४ ॥

ॐ सूर्यश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः
पापेभ्यो रक्षन्तां यद्रात्र्या पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां
पद्भ्यामुदरेण शिरसा रात्रिस्तदवलुम्पतु यत्किञ्चिद्दुरितं
मयि इदमहममृतयोनौ सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा ।

नीचे लिखे हुए विनियोगयुक्त मन्त्रों से कुशा लेकर अपने
ऊपर जल छिड़के । ७ दफे शिर पर, आठवें दफे पृथ्वी पर, नवें दफे पुनः
शिर पर छिड़के ।

(विनियोगः)

ॐ आपो हिष्ठेत्यादित्र्यचस्य सिन्धुद्वीप ऋषिर्गायत्री-
छन्दः आपो देवता मार्जने विनियोगः ।

(मन्त्रः)

ॐ आपो हि ष्ठामयो भुवः १ । ॐ तान उज्जै दधातन २ ।

पं. गे. दत्त शर्मा
जहंगीराबाद २०२३६४
बलन्दारा

यजुर्वे०

॥ ५ ॥

ॐ महेरणाय चक्षसे ३ । ॐ यो वः शिवतमो रसः ४ । ॐ
 तस्य भाजयतेह नः ५ । ॐ उशतीरिव मातरः ६ । ॐ
 तस्मा ऽअरङ्ग माम वः ७ । ॐ यस्य क्षयाय जिवन्थ ८ ।
 ॐ आपो जनयथा च नः ॥ ९ ॥

हाथ में जल लेकर नीचे लिखे हुए विनियोगयुक्त मन्त्र पढ़ते हुए
 जल को शिर में लगा कर पृथ्वी पर गिरा देवे ।

(विनियोगः)

ॐ द्रुपदादिवेति कोकिलो राजपुत्र ऋषिरनुष्टुप्छन्दः
 आपो देवता सौत्रामण्यवभृथे विनियोगः ।

(मन्त्रः)

ॐ द्रुपदादिव मुमुक्षानः स्विन्नः स्नातो मलादिव ।
 पूतं पवित्रेणैवाज्यमापः शुन्धन्तु सैनसः ॥

संख्या

॥ ५ ॥

फिर हाथ में जल लेकर नीचे लिखे हुए विनियोग करके मन्त्र को तीन बार पढ़कर नासिका के अग्र भाग से जल लगाये हुए अपने शरीर से निकला हुआ पाप समझ कर अपनी बायाँ ओर जल को फेंक दे।

(विनियोगः)

ॐ अघमर्षणसूक्तस्याघमर्षण ऋषिरनुष्टुप्छन्दः भाव-
वृतो देवता अश्वमेधावभृथे विनियोगः ॥

(मन्त्रः)

ॐ ऋतञ्च सत्यं चाभीक्षात्तपसोऽध्यजायत । ततो
रात्र्यजायतततः समुद्रो अर्णवः ॥ समुद्रादर्णवादधि संव-
त्सरो अजायत । अहो रात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो
वशी ॥ सूर्या चन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत् ।
दिवञ्च पथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः ॥

यजुर्वे०

॥ ६ ॥

आगे नीचे लिखे हुए विनियोगयुक्त मन्त्र को पढ़ कर ३ बार
आचमन करे ।

(विनियोगः)

ॐ अन्तश्चरसाति तिरश्चीन ऋषिरनुष्टुप्छन्दः आपो
देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः ।

(मन्त्रः)

ॐ अन्तश्चरसि भूतेषु गुहायां विश्वतो मुखः । त्वं
यज्ञस्त्वं वषट्कार आपो ज्योतीरसोऽमृतम् ।

आगे नीचे लिखे हुये गायत्री मन्त्र से सूर्यनारायण को रक्त चन्दन,
रक्ताक्षत, रक्त पुष्प युक्त जल अर्घा में लेकर, पूर्व तरफ ३ अर्घ्य देवे ।

(मन्त्रः)

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।
धियो यो नः प्रचोदयात् ।

संध्या

॥ ६ ॥

आगे नीचे लिखे हुये विनियोग-युक्त मन्त्रों से पूर्व मुख उपस्थान करे।

(विनियोगः)

ॐ उद्वयमित्यस्य हिरण्यस्तूपऋषिरनुष्टुप्छन्दः सूर्यो
देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः ॥ १ ॥

ॐ उदुत्यमित्यस्य प्रसूक्ण ऋषिर्गायत्री छन्दः सूर्यो
देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः ।

ॐ चित्रमित्यस्य कौत्सऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता
सूर्योपस्थाने विनियोगः ॥ ३ ॥

ॐ तच्चक्षुरित्यक्षरातीत पुर उष्णिक्छन्दो दध्यङ्गाथर्वण
ऋषिः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः ॥ ४ ॥

पं. प्रेम. शर्मा
जहांगिराबाद २०२३६२
बलनन्दगहर (उ०प्र०)

यजुर्वे०

॥ ९ ॥

(मन्त्राः)

संख्या

ॐ उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम् । देवं देवत्रा
सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् ॥ १ ॥

ॐ उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः । दृशे
विश्वाय सूर्यम् ॥ २ ॥

ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य बरुणस्याग्नेः ।
आप्रा व्यावा पृथिवीऽअन्तरिक्षं सूर्यऽआत्मा जगतस्त-
स्थुषश्च ॥ ३ ॥

ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् । पश्येम
शरदः शतं जीवेम शरदः शतं शृणुयाम शरदः शतं प्रव-
वाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतात् ॥ ४ ॥

॥ ९ ॥

आगे नीचे लिखे हुए मन्त्रों से न्यास करे ।

(मन्त्राः)

ॐ हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ भूः शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥
 भुवः शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ स्वः कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ
 भूर्भुवः स्वः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ भूभुवः स्वः अस्त्राय
 फट् ॥ ६ ॥

आगे हाथ में जल लेकर नीचे लिखे हुए विनियोगों को पढ़कर जल
 पृथिवी पर छोड़ देवे ।

(विनियोगः)

ॐ कारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता शुक्लो
 वर्णः जपे विनियोगः ॥ १ ॥

ॐ त्रिव्याहृतीनां प्रजापति-ऋषिर्गायत्र्युष्णमनुष्टु-
 प्छन्दांस्यग्निवाय्वादित्यदेवता अनादिष्टप्रायश्चित्ते जपे
 विनियोगः ॥ २ ॥

यजुर्वे०

॥१०॥

संध्या

ॐ गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिर्गायत्रीछन्दः सविता
देवता अग्निमुखमुपनयने जपे विनियोगः ॥ ३ ॥

(अथ गायत्रीध्यानम्)

श्वेतवर्णा समुद्रिष्ठा कौशेयवसना तथा ।

श्वेतैर्विलैपनैः पुष्पैरलङ्कारैश्च भूषिता ॥ १ ॥

आदित्यमण्डलस्था च ब्रह्मलोकगताऽथवा ।

अक्षसूत्रधरा देवी पद्मासनगता शुभा ॥ २ ॥

(गायत्री का आवाहन)

(विनियोगः)

ॐ तेजोऽसीति देवा ऋषयः शुक्रं दैवतं गायत्रीछन्दो
गायत्र्यावाहने विनियोगः ॥

ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि धामनामाऽसि ॥

॥१०॥

प्रियं देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि ॥ १ ॥ ॐ गायत्र्यस्ये-
कपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यपदसि नहि पद्यसे ॥
नमस्ते तुरीयाय दर्शताय पदाय परो रजसेऽसावदो मा
प्रापत् ॥ २ ॥

आगे नीचे लिखे हुए चौबीस मुद्राओं की गायत्री जपके आदि में करे ।

(२४ मुद्राः)

सुमुखं सम्पुटं चैव विततं विस्तृतं तथा । एक-द्वि-त्रि-
मुखं चैव चतुःपञ्च मुखं तथा ॥ षण्मुखाऽधो मुखं चैव
व्यापिकाञ्जलिकं तथा । शकटं यमपाशं च ग्रथितं चोन्मु-
खोन्मुखम् ॥ १ ॥ प्रलम्बं मुष्टिकं चैवः मत्स्य कूर्म-वराहकम् ॥
सिंहाक्रान्तं महाक्रान्तं मुद्गरं पल्लवं तथा ॥ ३ ॥ एता

पं. प्रेम ना. शर्मा
जहांगीराबाद २, २३६४
बुलन्दशहर (उ०प्र०)

यजुर्वे०

॥११॥

मुद्राश्चतुर्विंशज्जपादौ परिकीर्तिताः ।

(गायत्री मन्त्र का १०८ बार जप)

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात् ।

(आगे जप के अन्त में मुद्रा करना)

सुरभिर्ज्ञानवैराग्यं योनिः शङ्खोऽथ पङ्कजम् ।
लिङ्गनिर्वाणमुद्रेति जपान्तेऽष्टौ प्रदर्शयेत् ॥

(विसर्जन का मन्त्र)

उत्तरे शिखरे देवि भूम्यां पर्वतमूर्च्छनि ।
ब्राह्मणेभ्योऽभ्यनुज्ञाता गच्छ देवि यथा सुखम् ॥
भगवति देवि क्षमस्व स्वस्थानं गच्छ ॥

(अर्पणम्)

अनेन यथाशक्ति-प्रातःसन्ध्योपासनकर्मणा श्री-

संख्या

॥११॥

सविता सूर्यनारायणः प्रोद्यतां नमम ।

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु ।

न्यूनं सम्पूर्णतां यातु सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥

अथ मध्याह्न-सन्ध्याप्रयोगः

मध्याह्न सन्ध्या में सब प्रातःसन्ध्या की तरह करना । विशेष इतना कि आचमन, उपस्थान में भिन्नता है वह आगे लिखते हैं ।

(आचमन का मन्त्र विनियोग युक्त)

(विनियोगः)

ॐ आपः पुनन्स्विति विष्णुर्धृषिरनुष्टुप्छन्दः आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः ।

(मन्त्रः)

ॐ आपः पुनन्तु पृथिवीं पृथ्वी पूता पुनातु माम् ।

पुनन्तु ब्रह्मणस्पतिर्ब्रह्मपूता पुनातु माम् ॥

यजुर्वे०

॥१२॥

संध्या

यदुच्छिष्टमभोज्यं च यद्वा दुश्चरितं मम । सर्वं पुनन्तु
मामापोऽसर्ता च प्रतिग्रहं स्वाहा । इति मध्याह्नाचमनम् ।

आगे उपस्थान में सूर्य के तरफ मुँह करके दोनों हाथ उठाकर प्रातःसन्ध्या
के उपस्थान का मन्त्र पढ़ना ।

अनेन यथाशक्ति-मध्याह्नसन्ध्याख्येन कर्मणा भगवान्
सूर्यनारायणः प्रीयताम् ॥ प्रमादात्० । यस्य स्मृत्या० ।
विष्णवे नमः ॥ ३ ॥

अथ ब्रह्मयज्ञप्रयोगः

आचम्य, प्राणानायम्य । कुशपवित्रधारणम् ।

(तत्र मन्त्रः)

ॐ पवित्रेस्थो वष्णव्यो सवितुर्व्वः प्रसव त्पुनाम्य
च्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः । तस्य ते पवित्रपते
पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम् ॥

॥१२॥

(सङ्कल्पः)

ॐ तत्सदद्य शुभपुण्यतिथौ ममाऽऽत्मनः श्रुति-स्मृति-
पुराणोक्त-फलप्राप्त्यर्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं च यथाशक्ति-
ब्रह्मयज्ञेनाऽहं यक्ष्ये ।

(अथ न्यासाः)

ॐ तिर्यग्वित्ताय चमसायोर्ध्वबुधनाय छन्दसे नमः
मूर्द्धनि । ॐ गौतम-भरद्वाजाभ्यां नमः नेत्रयोः । ॐ
विश्वामित्र-यमदग्निभ्यां नमः श्रोत्रयोः । ॐ वशिष्ठ-
कश्यपाभ्यां नमः नासिकयोः । ॐ अत्रये नमः वाचि । ॐ
गायत्रीछन्दसे नमः । अग्नये नमः शिरसि । ॐ उष्णिक्-
छन्दसे नमः । सवित्रे नमः ग्रीवायाम् । ॐ बृहती छन्दसे
नमः । बृहस्पतये नमः अनुके (पृष्ठवंशः) । ॐ बृहद्रथन्तर-

यजुर्वे०

॥१३॥

संध्या

द्यावापृथिवीभ्यां नमः बाहोः । ॐ त्रिष्टुभे छन्दसे नमः ।
 इन्द्राय नमः नाभौ । ॐ जगत्यै छन्दसे नमः । आदित्याय
 नमः श्रोण्योः । ॐ अतिच्छन्दसे नमः । प्रजापतये नमः
 लिङ्गे । ॐ यज्ञायज्ञियाय छन्दसे नमः । वैश्वानराय नमः
 गुदे । ॐ अनुष्टुभे छन्दसे नमः । विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः
 ऊर्वोः । ॐ पंक्तिच्छन्दसे नमः, मरुद्भ्यो नमः जान्वोः । ॐ
 द्विषदायै छन्दसे नमः, विष्णवे नमः पादयोः । ॐ विच्छ-
 न्दसे नमः, वायवे नमः नासापुटस्थप्राणेषु । ॐ न्यूनाक्षराय
 छन्दोभ्यो नमः सर्वाङ्गेषु । वेदमयः सम्पद्यते ।

(द्वितीय-सङ्कल्पः)

ॐ इषेत्वादिषु मन्त्रेषु खं ब्रह्मान्तेषु दशप्रणवसहितेषु
 याः क्रियास्तत्र विवस्वानृषिः प्रजापतिर्देवता सर्वाणि

॥१३॥

छन्दांसि सर्वाणि सामानि प्रतिलिङ्गोक्ता देवता ब्रह्म-
यज्ञारम्भे विनियोगः ।

ॐ कारस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्री छन्दः परमात्मा देवता
भूर्भुवः स्वरिति महाव्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिः क्रमेण
गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दांसि अग्निर्वायुसूर्या देवताः तत्स-
वितुरिति विश्वामित्रर्ऋषिः गायत्रीछन्दः सविता देवता
ब्रह्मयज्ञारम्भे विनियोगः ।

(अथ पाठक्रमः)

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात् । इति त्रिःपठेत् । ॐ इषेत्वोर्ज्जेत्त्वा
वायवस्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण-
ऽआप्यायद्दमाध्न्याऽइन्द्राय भागम्प्रजावतीरनमीवाऽअय-

यजुर्वे०

॥१४॥

संख्या

क्षमा मा वस्तेन ऽईशत माघशर्ठं, सो ध्रुवाऽअस्मिन्गोपतौ
 स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि ॥ वसोः पवित्रम् ॥

ॐ हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्याऽपिहितं मुखम् ॥ योऽसा-
 वादित्ये पुरुषः सोऽसावहम् ॥ ॐ ३ खँ ब्रह्म ॥

(अथ ब्राह्मणम्)

ॐ व्रतमुपैख्यनन्तरेणाहवनीयञ्च गार्हपत्यञ्च
 प्राङ्मुक्तिष्ठन्नपऽउपस्पृशति ॥ तद्यदपऽउपस्पृशत्यमेध्यो वै
 पुरुषो यदनृतम्बदति तेन पूतिरन्तरतो मेध्या वाऽआपो
 मेध्यो भूत्वा व्रतमुपायानीति तस्माद्वा ऽअपऽउपस्पृशति ॥
 सोऽग्निमेवाभीक्ष्माणो व्रतमुपैति ॥ ॐ प्राशनी पुत्रादा-
 सुरिवासिनः प्राशनी पुत्रऽआसुरायणादासुरायणऽआसुरे-
 रासुरिर्याज्ञवल्क्याद्याज्ञवल्क्य ऽऊद्दालकादुद्दालकोऽरूणा-

॥१४॥

दरुणऽउपवेशेरुपवेशिः कुश्रेः कुश्रिर्व्राजश्रवसा वाजश्रवा
जिह्वावतो वाध्योगाज्जिह्वान् वाध्योगो सिताद्वार्धगणा-
दसितो वार्धगणो हरितात् कश्यपाद्धरितः कश्यपः शिल्गात्
कश्यपाच्छिल्पः कश्यपः कश्यपान्नेध्रुवेः कश्यपो नैध्रुविर्व्रा-
चो वागम्भिण्या ऽअम्भिण्यादित्यादादित्यानीमानि
शुक्लानि यजूंषि वाजसनेयेन याज्ञवल्क्येनाख्यायन्ते ॥

(ऋग्वेदः)

ॐ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् । होतारं
रत्नधातमम् ॥

(सामवेदः)

ॐ अग्नऽआयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये नि-
होतासत्सि बर्हिषि ॥

पं० प्रेम दत्त शास्त्री
जवांगीराबाद २०२३६४
(उ०प्र०)

यजुर्वे०

॥१५॥

(अथर्ववेदः)

ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये । शंयो
रभिस्रवन्तु नः ॥

(अथ चतुर्वेदानन्तरं अङ्गानि पठेत्)

अथानुवाकान् वक्ष्यामि । मण्डलं दक्षिणमक्षि हृदयम् ।
अथ शिक्षां प्रवक्ष्यामि । अथातोऽधिकारः फलयुक्तानि
कर्माणि । अथातो गृह्यस्थालीपाकानां कर्म । वृद्धिरादैच् ।
समाम्नायः समाम्नातः । मयरसतजभनलगसस्मितम् ।
पञ्चसंवत्सरमयं युगाध्यक्षम् ॥ गौः ग्मा । अथातो धर्म-
जिज्ञासा । अथातो ब्रह्मजिज्ञासा । योगीश्वरं याज्ञवल्क्यं
नारायणं नमस्कृत्य ब्रह्मणे नमः । इति विद्या तपो योनि-
र्विष्णुरीडितः । वाग्यज्ञनार्चितो देवः प्रीयतां मे जनार्दनः ॥
अनेन यथाशक्ति ब्रह्मयज्ञाख्येन कर्मणा श्रीभगवान् परमे-

संध्या

॥१५॥

श्वरः प्रीयतां नमम ॥ ॐ तत्सद्ब्रह्माऽपणमस्तु ॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञाक्रियादिषु ।

न्यूनं सम्पूर्णतां यातु सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥

इति ब्रह्मयज्ञप्रयोगः ।

अथ सायं सन्ध्याप्रयोगः

सायं सन्ध्या में भी प्रातःसन्ध्या की तरह सब मन्त्र वही रहेंगे विशेषता इतनी ही है कि आचमन, उपस्थान में अन्तर है, सो आगे लिखते हैं—विनियोग सहित मन्त्र ।

(विनियोगः)

ॐ अग्निश्चमेति रुद्रः ऋषिः प्रकृतिश्छन्दोऽग्निर्देवता
अपामुपस्पर्शने विनियोगः ।

(मन्त्रः)

ॐ अग्निश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापे-

यजुर्वे०

॥१४॥

भयो रक्षन्तां यदह्ना पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां
 पद्भ्यामुदरेण शिशना अहस्तदवलुम्पतु यत्किञ्चिद्दुरितं
 मयि इदमहममृतयोनौ सत्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा ।
 इत्याचमनम् ।

॥१५॥

आगे उपस्थान में पश्चिम मुख होकर हाथ सम्पुट करके पूर्ववत् प्रातः-
 सन्ध्या में जो उपस्थान के मन्त्र हैं वह पढ़े ।

(अर्पणम्)

अनेन यथाशक्ति सायंसन्ध्योपासनकर्मणा भगवान्
 सूर्यनारायणः प्रीयतां न मम । यदक्षरपदभ्रष्टं मात्रा
 हीनं च यद्भवेत् । तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर ॥
 प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताम्बरेषु यत् । स्मरणादेव तद्वि-
 ष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः ॥ यस्य स्मृत्या च नामो-

॥१६॥

वत्या तपोयज्ञ क्रियादिषु । न्यूनं सम्पूर्णतां यातु सर्वा वन्दे तमच्युतम् ॥

ॐ विष्णवे नमः ।

इति सायं संह्याप्रयोग-समाप्तः

पं० प्रेम दत्त शास्त्री
जहांगीराबाद २०२३६४
बुलन्दनगर (उ.प्र.)

पं० प्रेम एता शर्मा

जहांगीराबाद २२३६४

(३५०)

❀ इति ❀

यजुर्वेदीय-सन्ध्या-प्रयोगः

❀ समाप्तः ❀

प्राप्तिस्थानम्—मास्टर खेलाड़ीलाल संकटाप्रसाद, कचौड़ीगली, वाराणसी-१

अस्या पुनर्मुद्रणे सर्वे सिकासः यजुर्वेदीयसंस्कृतसंस्थाने प्रकाशयन्त्रा स्वायत्तीकृताः ।